

विघ्नहर्ता गणेश : सफलता, विवेक और आत्मसंयम का संदेश

गणेश चतुर्थी का पर्व भी केवल एक उत्सव नहीं बल्कि आत्मचिंतन का अवसर है। जब हम श्रद्धा से गणेश जी की मूर्ति का अवलोकन करते हैं तो उसमें निहित प्रतीकों को समझना चाहिए। उनका प्रत्येक अंग, प्रत्येक मुद्रा और उनका वाहन हमें जीवन जीने की एक नई शिक्षा देता है। यदि इन संदेशों को हम अपने आचरण में उतार लें, तो जीवन अधिक संतुलित, शांत और सफल बन सकता है।

विशाल मस्तक :

व्यापक दृष्टिकोण का संदेश

गणेश जी का विशाल मस्तक हमें यह सिखाता है कि मनुष्य को सोच सीमित नहीं होनी चाहिए। जो व्यक्ति व्यापक दृष्टिकोण रखता है वही सही निर्णय लेने में सक्षम होता है। जीवन में समस्याएँ सभी के सामने आती हैं, किंतु बुद्धिमान वही है जो समस्या के भीतर समाधान खोज ले। विशाल मस्तक उदारता, समझदारी और दूरदर्शिता का प्रतीक है।

बड़े कान : सुनने की कला

गणेशजी के बड़े कान यह संकेत देते हैं कि हमें अधिक सुनना और कम बोलना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरों की बात ध्यानपूर्वक सुनता है, वह अधिक ज्ञान अर्जित करता है और अपने संबंधों को भी सुदृढ़ बनाता है। परिवार, समाज और कार्यक्षेत्र - हर स्थान पर एक अच्छा श्रोता होना अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है। बड़े कान धैर्य और प्रहणशीलता के महत्व को रेखांकित करते हैं।

छोटी आँखें : एकाग्रता और सूक्ष्म दृष्टि

गणेश जी की छोटी आँखें यह दर्शाती हैं कि जीवन में सफलता के लिए एकाग्रता अनिवार्य है। जो मन हर दिशा में भटकता है, वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता। छोटी आँखें यह भी सिखाती हैं कि बाहरी आकर्षण से अधिक महत्वपूर्ण आंतरिक सत्य है। जब दृष्टि सूक्ष्म और केंद्रित होती है, तभी व्यक्ति सही और गलत के बीच स्पष्ट अंतर कर पाता है।

लंबी सूंड : अनुकूलन और विवेक

गणेशजी की सूंड अत्यंत विरिष्ट है। वह शक्तिशाली भी है और कोमल भी। वह बड़े से बड़े कार्य को भी सम्पन्न कर सकती है और छोटे से छोटे

भारतीय संस्कृति में श्रीगणेश को प्रथम पूज्य माना गया है। किसी भी शुभ कार्य का आरंभ गणेश वंदना से किया जाता है - चाहे वह शिक्षा हो, विवाह हो, गृह प्रवेश हो, या किसी नये व्यवसाय की शुरुआत। इसका अर्थ केवल धार्मिक परम्परा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक गहन संदेश भी देता है कि सफलता के लिए केवल बाहरी साधन पर्याप्त नहीं होते। उसके लिए बुद्धि, विवेक, धैर्य, आत्मसंयम और सकारात्मक दृष्टिकोण आवश्यक हैं। गणेशजी का स्वरूप इन्हीं गुणों का प्रतीक है।



विशाल उदर : सहनशीलता और स्वीकार्यता

गणेश का विशाल उदर केवल शारीरिक विशेषता नहीं है, बल्कि यह जीवन की हर स्थिति को आत्मसात करने की क्षमता का प्रतीक है। सुख हो या दुःख, प्रशंसा हो या आलोचना, सफलता हो या असफलता - इन सभी को समान भाव से स्वीकार करना ही परिपक्वता है। जो व्यक्ति परिस्थितियों को शांत मन से स्वीकार करता है, वही भीतर से सशक्त बनता है।

चूड़ा : इच्छाओं पर नियंत्रण

गणेश का वाहन चूड़ा अत्यंत गहन संदेश देता है। चूड़ा आकार में छोटा होते हुए भी हर स्थान में प्रवेश कर सकता है; उसी प्रकार मन को इच्छाएँ यदि अनियंत्रित हों, तो वे जीवन में अशांति उत्पन्न करती हैं। गणेश का चूड़ा पर विराजमान होना यह दर्शाता है कि बुद्धि और विवेक के माध्यम से इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। जो अपने मन का स्वामी बन जाता है, वही सच्चे अर्थों में विजयी होता है।

चार भुजाएँ : संतुलित जीवन का संकेत

गणेश की चार भुजाएँ जीवन के चार महत्वपूर्ण पक्षों - मन, बुद्धि, कर्म और संस्कार के संतुलन का प्रतीक हैं। उनके हाथों में अंकुश, पाश, मोदक और वरद मुद्रा हमें अलग-अलग शिक्षाएँ प्रदान करते हैं। अंकुश-मन को नियंत्रित करने का प्रतीक है, पाश-अनुशासन का, मोदक- आत्मिक आनंद का और वरद मुद्रा-कृपा और आशीर्वाद का।

विघ्नहर्ता का वास्तविक अर्थ

गणेश को विघ्नहर्ता कहा जाता है, किंतु इसका अर्थ केवल बाहरी बाधाओं को दूर करना नहीं है। वे हमारे भीतर के विघ्नों-अहंकार, क्रोध, लोभ, भय, आलस्य और भ्रम को समाप्त करने की प्रेरणा देते हैं। जब मन शुद्ध होता है और बुद्धि निर्मल होती है, तब जीवन का मार्ग स्वतः सरल होने लगता है।

अंतः गणेश की सच्ची पूजा केवल, फूल, दीप और प्रसन्न से नहीं, बल्कि उनके गुणों को जीवन में अपनाने से होती है। यदि हम व्यापक सोच, धैर्य, एकाग्रता, विवेक, आत्मसंयम और सेवा भाव को अपनाएँ, तो हमारे जीवन के विघ्न दूर होंगे। यही गणेश का आध्यात्मिक रहस्य है और यही उनके दिव्य स्वरूप का सबसे महत्वपूर्ण संदेश भी है।

गोवा के मुख्यमंत्री के दो दिवसीय माउंट आबू टैरे के दौरान



मुख्यालय पांडव भवन में प्रवाहित ब्रह्म यात्रा के शान्ति स्तम्भ का अवलोकन किया। और साथ ही शान्तिवन के विशाल प्रांगण का भ्रमण करने के पश्चात् पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के स्मृति सौभ अत्यंत लोक प्रहर्षक ब्रह्मजाल अर्पित की। इसके पश्चात् शिव भोक्तानाथ का भंडारा (सोलर किचन) पहुंचे, जहाँ सोलर तकनीक से भोजन बनने की प्रक्रिया को समझा। वहीं दादी कटिज में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुनी दीदी से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया। दादी ने मुख्यमंत्री का शील ओढ़ाकर और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया।



ज्ञान सरोवर-माउंट आबू (राज.)। ब्रह्मकुमारीज व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा "आध्यात्मिकता से बदलती है सोच, मजबूत बनता है व्यवसाय और समाज" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ज्ञान सरोवर निदेशिका व ब्रह्मकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दादी, शांतनु डी.परास्वर, डायरेक्टर (ऑपरेशन), एनपीसीआईएल, मुंबई, पी.राम म, जीएम (सीएसआर), एनएमडीसी एवं निदेशिका, एनएमडीसी सीएसआर फाउंडेशन, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. हरिश, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. लालजी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. राजसिंह, ब्र.कु. मोहन पटेल एवं ब्र.कु. नम्रता।



सिरसा-आनन्द सरोवर (हरियाणा)। एडीसी अर्पित सिंघल को ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दादी एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.विन्दु दीदी।



कुरुक्षेत्र-दर्रा खेड़ा (हरियाणा)। श्री कृष्ण आरूप जूनियर्स, सितंबर-08 और ब्रह्मकुमारीज के बीच हुए एमजीए गठन का मुख्य उद्देश्य विरचविशालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, एकता और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है। तत्पश्चात् चित्र में जूनियर्स की ओर से रजिस्ट्रार प्रोफेसर कृष्ण कांत, ब्र.कु. डॉ. सचिन पाव, राजयोगिनी ब्र.कु. सरिता दादी एवं ब्र.कु. मयू।



भादरा-राज। ब्रह्मकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए तहसीलदार परमेश जौड़, एचडीएलसी बैंक शाखा प्रबंधक राजेश सेनी, एयू एमएल फर्देनस बैंक शाखा प्रबंधक सहदेव शर्मा, ब्र.कु. वैष्णवीपाल, माउंट आबू, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकांता दादी, ब्र.कु. भगवती, ब्र.कु. गायत्री तथा अन्य।



रामगंज मंडी-राज। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर उपकारागार में कैदी भाइयों के लिए नशा मुक्ति एवं आध्यात्मिक जागरूकता कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जाग्रति। साथ ही ब्र.कु. गरिमा एवं ब्र.कु. हर्षिता।